रसेल
एक विशेष बच्चा है



ऑटिज़्म के बारे में किताब

बच्चों के लिए

रसेल
एक विशेष बच्चा है



यह पुस्तक माता-पिता के लिए भी लिखी गई है,
जिससे कि वे अपने बच्चों की मदद कर सकें।

लेखक: चार्ल्स अमेंटा

माता-पिता के लिए पुस्तक परिचय

यह पुस्तक इसलिए लिखी गई, जिससे कि सबसे खास लोग, यानि बच्चे, ऑटिज़्म के बारे में जान सकें। मेरा मानना है कि एक ऑटिस्टिक बच्चे का पिता और साथ ही एक डॉक्टर होने के नाते, ऑटिज़्म का एक अंतरंग और यथार्थ चित्रण करने में मुझे बहुत सहायता मिली है। मुझे आशा है कि माता-पिता, अध्यापक व अन्य लोगों के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

न केवल अख़बारों और पत्रिकाओं के लेखों के लिए, बल्कि टेलीविज़न कार्यक्रमों और चलचित्रों के लिए भी, ऑटिस्म एक प्रचलित विषय बन गया है। यद्‌यपि लोगों का इस विषय पर ध्यान देना सर्वथा स्वागत-योग्य है, और इसके पीछे उनका अभिप्राय भी सर्वथा उचित है, लेकिन इन लेखों और कार्यक्रमों में दो ऐसी बातें दर्शाई जाती हैं, जो थोड़ा परेशान करने वाली हैं। पहली तो यह, कि कुछ माता-पिता जाने-माने उपचारों को न अपना कर बीमारी का मूल कारण खोज लेते हैं, और एक चमत्कारी ढंग से बीमारी ठीक हो जाती है। इस प्रकार बीमारी का संम्पूर्ण निदान हो पाना लगभग असंभव है। इस प्रकार का निदान तभी देखने को मिलता है, जब ऑटिज़्म जैसे लक्षण ऑटिज़्म नहीं, बल्कि किसी और कारण से होते हैं। वे सभी बच्चे जो बोलते नहीं, या असाधारण व्यवहार करते हैं, ऑटिज़्म से पीड़ित नहीं होते। दूसरी परेशान करने वाली बात जो अक्सर पाई जाती है, वह यह कि ऑटिस्टिक लोग विशिष्ट प्रतिभाओं से संपन्न होते हैं, जैसे अद्भुत याददाश्त, या फिर गणित या संगीत की प्रतिभा। इस प्रकार की विशिष्ट प्रतिभाएं बहुत कम ही देखने को मिलती हैं।

ऑटिज़्म एक गंभीर बीमारी है, जिसमें मानसिक विकास बाधित हो जाता है। हाल के अनुमानों के अनुसार यह प्रति १०००० में १५ बच्चों को होती है। बचपन का ऑटिज़्म बालक के व्यवहार के तीन पहलुओं को प्रभावित करता है, सामाजिक व्यवहार, भाषा का विकास, और खेल-कूद की गतिविधियां। आटिज्म के कारण बहुधा अज्ञात ही हैं, हालाँकि पाया गया है कि कई बार ऐसे बच्चे जन्म से पहले किसी संक्रमण या अन्य समस्या से पीड़ित रहे होते हैं। क्रोमोसोम की असामान्यता भी ऑटिज़्म का कारण बन सकती है। ऑटिज़्म के लक्षण सामान्यतः दो वर्ष की उम्र तक दिखाई देने लगते हैं। लेकिन कई बार इससे काफी पहले ही ऑटिस्टिक शिशुओं में कुछ लक्षण दीखने लगते है, जैसे आँखें न मिलाना, न मुस्कुराना, और मां के आलिंगन से अरुचि।

ऑटिस्टिक बच्चों के अपने माता-पिता, भाई-बहनों, या अन्य साथी बालकों के साथ सामान्य सम्बन्ध नहीं बन पाते। वे दूसरे लोगों में कोई विशेष रूचि नहीं दिखाते। जब वे रोते हैं, तो माता-पिता को उन्हें सांत्वना देकर चुप नहीं करा पाते। कुछ ऑटिस्टिक बच्चे उनका चुम्बन लेने, या उन्हें गले लगाने पर विशेष अरुचि और विरोध प्रदर्शित करते हैं, जबकि कुछ ऐसे कार्यों के लिए आग्रह करते हैं। हर प्रकार से कार्यशील वयस्क बन जाने के बाद भी वे अन्य लोगों के दृष्टिकोण को समझ पाने में कठिनाई महसूस करते हैं।

बहुधा ऑटिस्टिक लोग मौखिक भाषा में असमर्थ होते हैं। यदि ऑटिस्टिक बालक बोल नहीं सकता, तो उसमें किसी भी प्रकार के संकेतों या चिन्हों को पहचानने या प्रयोग करने की क्षमता बहुत कम, या नहीं के बराबर होती है, और वह दूसरों की कही बातें बहुत कम समझ पाता है।ऑटिस्टिक व्यक्ति की भाषा में सर्वनाम की गलतियां अक्सर पाई जाती हैं। वह दूसरों से सुने वाक्यों को ही अक्सर दोहराता है। उदहारण के लिए, एक ऑटिस्टिक बालक जिससे भी मिलता, उससे पूछता था, "क्या आप पांच कंपनियों के नाम बता सकते हैं, जो ग्रीटिंग कार्ड बनाती हैं?"

ऑटिस्टिक बच्चे अन्य बच्चों के साथ नहीं खेलते, और न ही वे खेलने का अभिनय करते हैं। बजाय यह अभिनय करने के कि खिलौना कार का इंजन चल रहा है, वे इन कारों को कतार में सजाने लगते हैं। स्वयं गोल-गोल घूमना, या अन्य वस्तुओं को घुमाना उनके लिए सामान्य है, या फिर वे एक ही काम को बार बार करते रहते हैं, जैसे कॉपी में से पन्ने फाड़ना।

ऑटिस्टिक बच्चों को अपनी परिस्थितियों या अपनी दिनचर्या में कोई भी बदलाव आसानी से सहन नहीं होता। उनके सभी कार्य-कलापों में नियमितता बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, एक ऑटिस्टिक बच्चा जब भी एक विशेष रेलवे फाटक से गुज़रता है, तो रेलगाड़ी देखने की ज़िद करता है। और यदि ड्राइवर रुक कर रेलगाड़ी का इंतज़ार न करे तो ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला कर अपना क्रोध प्रगट करता है।

ऑटिस्टिक बच्चों में आवाज़ों, दृश्यों, और गंधों के प्रति भी अतिशय संवेदनशीलता देखने को मिलती है। जैसे, किसी इमारत के अंदर आवाज़ के गूंजने से वे बहुत विचलित हो जाते हैं। इसके उलट, कुछ बच्चे बहुत तीव्र आवाज़ों, या बहुत दर्द होने पर भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते। बहुत से तो खतरनाक तरीके से स्वयं को ही हानि पहुँचाने वाले होते हैं।

यद्यपि इस बीमारी से निजात पाना तो लगभग असंभव है, रोगी के जीवन को सुधारने के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है। आधुनिक उपचार में घर और स्कूल के बीच सहयोग पर बहुत बल दिया जाता है, बजाय संस्थागत नियंत्रण के। बालक से संवाद के लिए मौखिक भाषा के साथ साथ इशारों की भाषा का भी प्रयोग किया जाता है। उचित व्यवहार को प्रेरित करने के लिए कोई पुरस्कार, जैसे खाने की किसी स्वादिष्ट वस्तु का प्रयोग किया जाता है। व्यवहार को नियंत्रित करने, और सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए पूर्णतः नियमित दिनचर्या और बंधे हुए कार्य-कलाप बहुत महत्वपूर्ण हैं।

जो ऑटिस्टिक बच्चे पांच वर्ष की उम्र तक बोलना नहीं सीख पाते, उनके लिए भविष्य में एक स्वतंत्र जीवन जी पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। वयस्क होने पर या तो वे अपने माता-पिता के साथ रहते है, या अन्य ऑटिस्टिक लोगों के साथ किसी संस्था में। एक आशावान भविष्य केवल उन्हीं के लिए संभव है, जो भाषा में कुछ प्रवीणता हासिल कर लेते हैं, और जिनका आई. क्यू. ७० से अधिक होता है। दुर्भाग्य से केवल २० प्रतिशत ऑटिस्टिक बच्चों का ही आई क्यू इतना होता है।

यह कह पाना मुश्किल है कि इससे कम आई क्यू वाले बच्चे मंद-बुद्धि हैं या नहीं। हो सकता है कि वे भाषा की असमर्थता के कारण, या परीक्षा के प्रति अरुचि के कारण प्रश्नों का उत्तर न दे पा रहे हों। लेकिन फिर भी, आई क्यू परिणाम का जो भी अर्थ हो, वह भविष्य की सफलता का अच्छा सूचक है।

ऑटिस्टिक व्यक्ति की उम्र जैसे बढ़ती है, उसके सामाजिक व्यवहार में थोड़ा सुधार आता है। लेकिन कभी-कभी किशोरावस्था में इस योग्यता में कमी आ जाती है। और भी चिंता की बात यह है, कि लगभग २५ प्रतिशत को इस उम्र में मिर्गी के दौरे पड़ने लगते हैं। ऐसे समय दौरों को रोकने वाली दवाएं, या व्यवहार को मर्यादित करने वाली दवाएं लाभकारी सिद्ध होती हैं। लेकिन ऑटिज़्म निश्चय ही कोई मनोरोग नहीं है। कई ऐसी दवाओं पर शोध चल रहा है, जो तन्त्रिकासंचालक (neurotransmitter) रसायनों पर प्रभाव डालती हैं, और कुछ ऑटिस्टिक बच्चों पर इनके अच्छे परिणाम देखने में आये हैं।

किसी भी बीमारी के, और खासकर ऑटिज़्म जैसी बीमारी के, बहुत से कारण होते हैं, लेकिन हमेशा कुछ व्यक्तिगत अंतर भी होते हैं। यदि कोई भी माता-पिता इस बारे में और प्रश्नों के उत्तर जानना चाहते हों, तो उन्हें इस पुस्तक के अंत में दी गई ऑटिज़्म के विशेषज्ञों की सूची में से किसी विशेषज्ञ से संपर्क करना चाहिए।

जहाँ तक इस पुस्तक में दिए चित्रों का सम्बन्ध है, वे हमारे पारिवारिक जीवन के स्वाभाविक चित्र हैं। केवल अंत में दिया गया चित्र विशेष रूप से खिंचवाया गया था। हमने रसेल को इस चित्र में रहने के लिए कैसे राज़ी किया, जो कि उसके लिए काफी मुश्किल था? हमने उसे पुरस्कार-स्वरुप कुछ मिठाइयां दीं (शायद घूस कहना ज़्यादा ठीक होगा), और मैंने जल्दी से फोटो खेंच लिया।

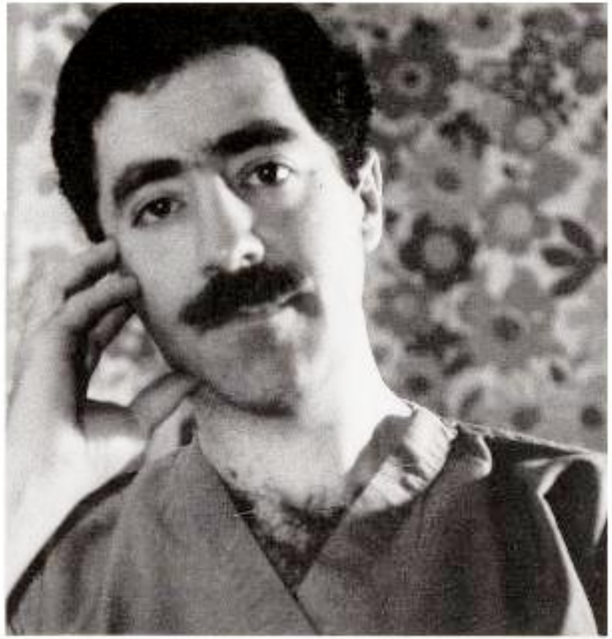
मुझे आशा है, कि बच्चों को यह पुस्तक अच्छी लगेगी। बहुत अच्छा होगा यदि इसे पढ़ने के बाद उनमें इस पर चर्चा हो कि किस प्रकार संसार के "रसेल" भी उनके जैसे ही हैं, और उनसे भिन्न भी। हो सकता है कि पुस्तक पढ़ने वालों में से कुछ ऑटिज़्म के शिक्षक बन जाएँ, या उस पर शोध-कार्य करें।



रसेल एक बहुत ख़ास बच्चा है। वह ऑटिस्टिक है। इसका मतलब है कि वह अन्य बच्चों से तीन प्रकार से भिन्न है। पहला यह, कि जहाँ तक संभव हो वह अकेला रहना पसंद करता है। दूसरे लोगों में उसे अधिक रुचि नहीं दिखाई देती। दूसरा यह, कि वह बातचीत नहीं कर सकता, और वह मुश्किल से समझ पता है कि दूसरे लोग क्या कह रहे हैं। और तीसरा, उसका खेलने का तरीका अन्य बच्चों से अलग है।

रसेल ९ वर्ष का है। उसके दो छोटे भाई हैं, बेंजामिन और ग्रेगोरी। वे दोनों अपने बड़े भाई रसेल से बहुत प्यार करते हैं। वे जानते हैं कि वह ऑटिस्टिक है, और इसलिए वे अधिक कोशिश करते हैं उसकी सहायता करने की, और उससे दोस्ती करने की। सभी भाइयों की तरह वे भी एकसाथ खूब मज़े करते हैं। उन्हें साथ-साथ नहाना बहुत अच्छा लगता है।





ग्रेगोरी और बेंजामिन कभी-कभी अपने पिता से पूछते हैं, कि रसेल ऑटिस्टिक क्यों है। उनके पिता एक डॉक्टर हैं, लेकिन फिर भी उन्हें इसका उत्तर नहीं पता। यह कोई नहीं जानता कि कुछ बच्चे ऑटिस्टिक क्यों हो जाते हैं। अधिकांश तो जन्म से ही वैसे होते हैं। शिशु अवस्था में कुछ ऑटिस्टिक बच्चे, जब उनके माता-पिता उन्हें गले लगाते हैं, तो कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाते। वे उनकी बाँहों में अकड़े से पड़े रहते हैं, और जब कोई उन्हें देख कर मुस्कुराता है, तो वे वापस नहीं मुस्कुराते।



रसेल जब एक शिशु था, तो वह भी अन्य ऑटिस्टिक बच्चों की तरह अपने माता-पिता के साथ मुस्कुराता, और उनसे गले लगता। शायद इसीलिए अब भी उसकी मुस्कराहट इतनी प्यारी है। उसे गुदगुदी करना अच्छा लगता है, और अपनी माँ के गले लगना उसे अब भी अच्छा लगता है।

ग्रेगोरी और बेंजामिन को अपने दोस्तों के साथ खेलना अच्छा लगता है। लेकिन रसेल को नहीं। उसे अकेले रहना ही पसंद है। वह कमरे के दूसरे कोने में चला जाता है, या फिर, अगर दूसरे बच्चे उसके नज़दीक जाएँ, तो कमरा छोड़ कर ही चला जाता है। सभी ऑटिस्टिक बच्चों के लिए दोस्त बना पाना मुश्किल होता है। जब वे थोड़े बड़े होते हैं, तो वे अन्य लोगों के बीच थोड़ा सहज महसूस करने लगते हैं।



ऑटिस्टिक बच्चों को ठीक से बोलना सीखने में भी दिक्कत आती है। रसेल की तरह ही, उनमें से अधिकांश बिलकुल भी नहीं बोल सकते। कुछ पूरे-पूरे वाक्य, या वाक्यों के कुछ हिस्से, इस तरह बोलते है जैसे तोते की तरह रटा-रटाया बोल रहे हों। वे कहते हैं, "तुम्हें बिस्कुट चाहिए", जबकि असल में वे कहना चाहते हैं, "मुझे बिस्कुट चाहिए"। अक्सर उनकी आवाज़ बिलकुल भावशून्य और यंत्रवत होती है, जैसे कोई कंप्यूटर या रोबॉट बोल रहा हो। लेकिन घर पर ही या स्कूल में थोड़ी सहायता मिलने पर वे बेहतर बोलना सीख सकते हैं।







रसेल गुनगुनाना, बड़बड़ाना, हंसना या चीखना-चिल्लाना बखूबी कर सकता है। जब वह नाखुश होता है, या उत्तेजित होता है, दोनों अवस्थाओं में रसेल चीखने-चिल्लाने लगता है। कभी वह ज़ोर-ज़ोर से हँसता है, और उसके बाद चीखने लगता है। यह समझ पाना मुश्किल है कि रसेल क्या महसूस कर रहा है, और उसकी मनोदशा इतनी जल्दी क्यों बदल जाती है।



रसेल के माता-पिता और उसके अध्यापक उसे इशारों की भाषा सिखाने की कोशिश करते हैं। उसने कुछ शब्दों के इशारे सीख लिए हैं, जैसे "खाना", "पीना", और "मुझे और चाहिए"। रसेल "मुझे और चाहिए" का इशारा इस तरह करता है, जैसे वह प्रार्थना कर रहा हो, या ताली बजा रहा हो।

ग्रेगोरी और बेंजामिन को लगता है कि इशारों से बातचीत करना बहुत मज़ेदार है। वे दोनों "पीने" का इशारा रसेल से ज़्यादा अच्छी तरह कर लेते हैं।





रसेल को इशारों से बात करना अच्छा नहीं लगता। जब उसे प्यास लगती है, तो वह अपना कप किसी के हाथ में थमा देता है। जब उसे कुछ पीना होता है, तो वह माँ का हाथ पकड़ कर उसे रेफ्रीजिरेटर के दरवाज़े पर रख देता है। ऑटिस्टिक बच्चे अक्सर अभिनय करके बताते हैं कि उन्हें क्या चाहिए।



रसेल को खाना-पीना बहुत अच्छा लगता है, लेकिन वह सलीके से नहीं खाता है। उसे अपनी उँगलियों से खाना अच्छा लगता है। जब कोई देख नहीं रहा होता तो वह पिज़्ज़ा की टॉपिंग तो खा जाता है, और नीचे का क्रस्ट छोड़ देता है। वह सैंडविच को खोल कर उसके बीच लगा पीनट बटर इधर उधर फ़ैलाने लगता है।

रसेल के माता-पिता ने उसे चम्मच और कांटे की मदद से ठीक प्रकार खाना सिखाया है।





क्योंकि रसेल आटिज्म से बुरी तरह ग्रस्त है, उसके लिए कोई भी काम सीखना बहुत मुश्किल है। शौचालय जाना और अपने कपडे स्वयं पहनना सीखने में उसे बहुत समय लगा। सभी ऑटिस्टिक बच्चों को यह सब सीखने में इतनी परेशानी नहीं आती। कुछ तो काफी तेज़ होते हैं। और कुछ तो बिलकुल अद्भुत। वे तो बिना कागज़ या कैलकुलेटर के गुणा भी कर लेते हैं। कुछ पियानो बहुत अच्छी तरह बजा लेते हैं। तेज़-दिमाग़ व प्रतिभाशाली होने के बावजूद ऑटिस्टिक बच्चों को विशेष सहायता की आवश्यकता पड़ती है। खास कर दोस्त बनाने में या कोई रोज़गार सीखने में उन्हें खास मदद की ज़रूरत पड़ती है।



कभी-कभी रसेल अपनी आखें हथेलियों से ढक लेता है, अपनी भौहें खींचने लगता है, या फिर शून्य में देखने लगता है। हो सकता है कि उसे रोशनी बहुत तेज़ लग रही हो। या हो सकता है कि वह आस-पास के लोगों की ओर नहीं देखना चाहता। जब रसेल डेढ़ वर्ष का था, उसने अपने माता-पिता से आँखें मिलाना, या उनकी ओर ध्यान देना छोड़ दिया था। जब वे उसे बुलाते तो वह नहीं आता था, और जब वे उससे बोलते तो वह उनकी ओर नहीं देखता था। अपनी ओर ध्यान देने को प्रोत्साहित करने के लिए उसके माता-पिता, जब भी वह उनकी ओर देखता, उसे कोई स्वादिष्ट वस्तु खाने को देते। इस प्रकार पुरस्कार देना ऑटिस्टिक बच्चों को सीखने में मदद करता है। यदि ये पुरस्कार किसी खेल का हिस्सा हों, तो वे और भी प्रभावी होते हैं।



अधिकांश बच्चे दूसरों को देख कर सीखते हैं। वे खेलते समय भी सीखते हैं, और अपनी कल्पनाशक्ति का प्रयोग करते हैं। बेंजामिन और ग्रेगोरी संगीत संचालन का अभिनय अपनी माँ को देखकर उसी अनुसार करते हैं।



बेंजामिन रसेल की फोटो खेंचने का अभिनय करता है।

ग्रेगोरी एक डॉक्टर होने का अभिनय करता है, अपने पिता की तरह।



लेकिन रसेल को उस खिलौने कैमरे को अपने मुँह में डालना ज़्यादा अच्छा लगता है। रसेल अन्य लोगों की नक़ल नहीं करता। ऑटिस्टिक बच्चे अभिनय करने वाले खेल नहीं खेलते।



ऑटिस्टिक बच्चों का खेलने का तरीका अक्सर अन्य बच्चों से बहुत अलग होता है। कई बार वे एक ही काम को बार-बार, बार-बार करते रहते हैं, जैसे खिलौना कारों को एक कतार में सजाना। लेकिन वे कारों की आवाज़ नहीं निकालते। कुछ ऑटिस्टिक बच्चे खिलौनों को गोल-गोल घुमाते रहते हैं - और यह ज़रूरी नहीं कि वह कोई लट्टू-नुमा खिलौना हो। कइयों को चमकदार चीज़ों से खेलना अच्छा लगता है, जैसे स्टील का चम्मच या दरवाज़े का हत्था।





रसेल के पास एक विशेष "टाइमर" है जिसे घूरना उसे पसंद है। "टाइमर" के अंदर एक चमकीला हरा तरल ऊपर से नीचे बहता है।



रसेल जहाँ भी जाता है, प्लास्टिक की एक सिरकी अपने साथ लिए रहता है। वह उसे मोड़ कर अपने अंगूठे और ऊँगली के बीच दबा लेता है। उसे खिड़की से बाहर देखना पसंद है, और वह कोई खिलौना लेकर खिड़की के शीशे पर पट-पट मारता रहता है। और खिलौना न हो, तो वह अपने हाथों से ही ऐसा करता है।

रसेल के माता-पिता को कुछ मदद हासिल है, उसे पढ़ाने-सिखाने के लिए, क्योंकि रसेल स्कूल जाता है। उसे स्कूल बस में जाना अच्छा लगता है। उसकी कक्षा में अन्य बच्चे भी उसके जैसे ही हैं। स्कूल में वह छोटे-छोटे काम करना और इशारों से बातें करना सीखता है। अध्यापक उसे दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना और दूसरे बच्चों के साथ खेलना भी सिखाते हैं।







उसके स्कूल में एक झूला है। रसेल को उस पर झूलना बहुत अच्छा लगता है। यूँ तो सभी बच्चों को संगीत सुनते हुए शरीर को हिलाना-झुलाना अच्छा लगता है, लेकिन ऑटिस्टिक बच्चों को यह विशेष रूप से पसंद होता है। कभी-कभी तो यह उनका सबसे प्रिय खेल बन जाता है।

रसेल बड़ी शालीनता से चलता है। वह तैरना सीख रहा है, और उसे पानी में रहना बहुत अच्छा लगता है। कुछ ऑटिस्टिक बच्चे अधिक शालीनता पूर्वक काम नहीं कर पाते। कुछ का चलने-फिरने का तरीका बड़ा बेढब सा होता है।



कभी-कभी ऑटिस्टिक बच्चे बहुत संवेदनशील होते हैं। उनकी रोज़ाना की दिनचर्या में, या उनकी किसी प्रिय गतिविधि में, यदि कोई बदलाव किया जाये तो वे बहुत विचलित हो जाते हैं। यदि उनकी प्रिय कुर्सी अपने स्थान से हटा दी जाये, तो तुरंत उनका ध्यान इस ओर जाता है, भले ही उसे अपनी जगह से थोड़ा सा ही खिसकाया गया हो।



रसेल को अपना हरेक काम नियत समय पर ही करना पसंद है, खासकर रात्रि का भोजन।



कभी-कभी रसेल समस्या खड़ी कर देता है। वह मरहम को दीवार पर चुपड़ने लगता है। या फिर टूथ-पेस्ट को खाने लगता है। ग्रेगोरी और बेंजामिन के खिलौनों को तोड़ डालता है। इससे वे दोनों बहुत नाराज़ हो जाते हैं। गुस्सा आने की वजह से ग्रेगोरी उसे मुक्का दिखा रहा है। रसेल पीछे की दीवार पर लगा वाल-पेपर फाड़ने लगता है।



रात का समय रसेल के लिए सबसे मुश्किल भरा होता है। कभी कभी वह सोते से जाग कर चिल्लाने लगता है, भले ही उसे कहीं दर्द न हो रहा हो। कभी वह पहले रोता है, और फिर हंसने लगता है। और कभी वह इतना उत्तेजित होता है, कि बिस्तरे में रह ही नहीं सकता।

अधिकांश ऑटिस्टिक बच्चों को रात के समय दिक्कतें आती हैं। कुछ जान बूझ कर खुद को चोट मार लेते हैं। लगता है, दर्द होने की वे कोई चिंता नहीं करते। जब रसेल पर इस तरह के चिढ़चिढ़ेपन का दौरा पड़ता है, तो वह अपनी एड़ी से अपनी पिंडली पर ज़ोर-ज़ोर से मारने लगता है। सौभाग्य से डॉक्टरों और अध्यापकों ने ऑटिस्टिक बच्चों की मदद करने के नए उपाय खोज निकाले हैं, जिससे वे स्वयं को आहत न करना सीख पाएं।



ऑटिस्टिक होते हुए भी रसेल एक प्रसन्न और खुशमिज़ाज़ बच्चा है।

और हालाँकि वह कभी कभी परेशानियां खड़ी ज़रूर करता है, लेकिन फिर भी उसके परिवार वाले घर में उसकी मौजूदगी के लिए कृतज्ञ महसूस करते हैं। उन्हें लगता है कि वह एक बहुत खास इंसान है।



समाप्त